उत्पत्ति ४८: भाग २

- "सच्चा" इस्राएली = आध्यात्मिक इस्राएली
- वह जो इस्राएल और तोराह के आदर्शों को अपने जीवन में धारण करता है।
- येशु में विश्वास रखने वाला।
- वचन = मेमरा = लोगोस
- मूसा को सिनाई पर्वत पर दिए गए आदर्श (तोराह)
- याकूब ने यूसुफ के दोनों पुत्रों को गोद ले लिया।
- एफ्रेम गैर-यहूदी राष्ट्रों के लिए आशीष बनने वाला था।

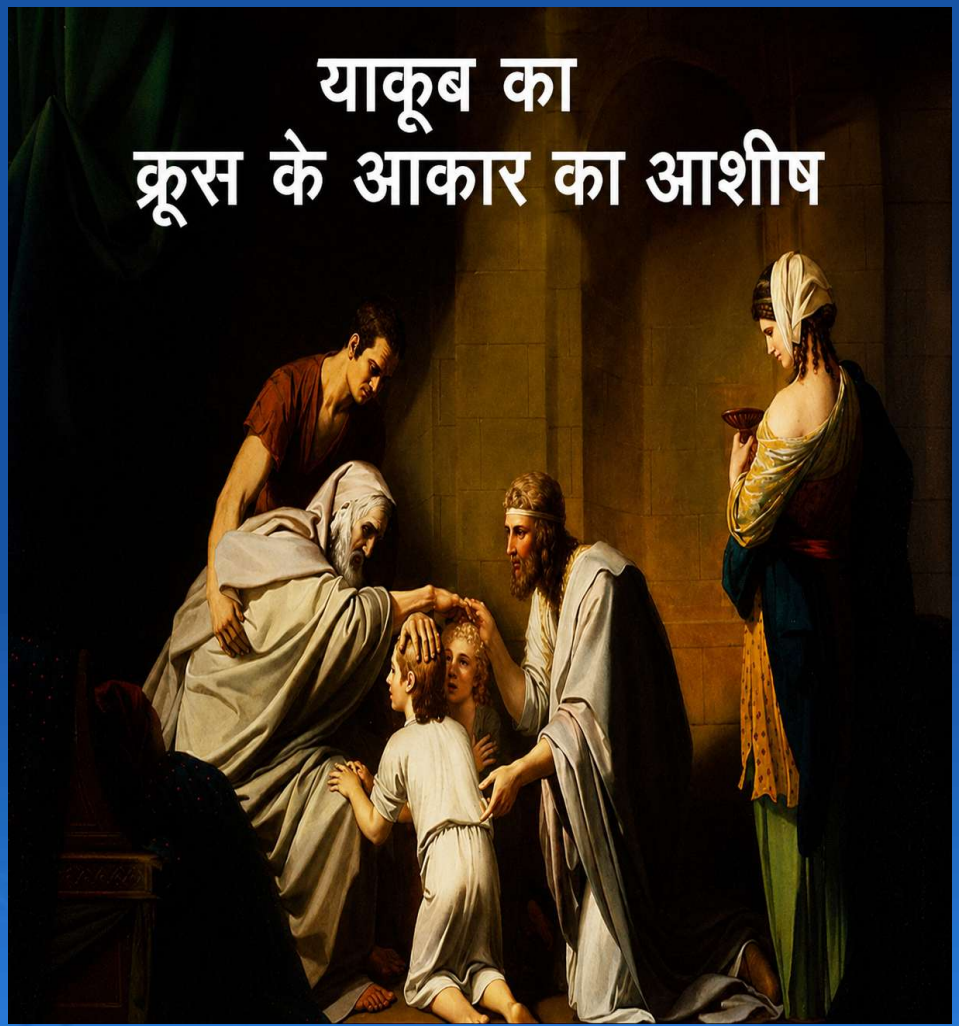

इस्राएल भूमि का अधिकारी होता है

- गिनती ३४:१३-२८
- जासूसों ने रिपोर्ट दी कि कनान पर विजय प्राप्त करना असम्भव है।
- परमेश्वर ने इस्राएल को दण्ड देते हुए चालीस वर्ष तक जंगल में वापस भेज दिया।
- चालीस वर्ष पूर्ण होने के बाद इस्राएल अब कनान पर अधिकार करने के लिए तैयार है।
- "...जब तुम कनान में प्रवेश करोगे.....तो वह तुम्हारी भूमि हो जाएगी..."

आज इस भूमि का स्वामी कौन है?

➢ केवल वही दृष्टिकोण महत्वपूर्ण है.....वह है परमेश्वर का!!

इस्राएल के विषय में वाद-विवाद करना मूर्खता है!!

- आधुनिक भू-राजनीतिक वास्तविकताओं का परमेश्वर द्वारा इस्राएल को भूमि देने पर कोई प्रभाव नहीं है।
- न्याय, मानवीय नैतिकता की कल्पनाएँ इस्राएल के विषय में कोई महत्त्व नहीं रखतीं।
- इस्लाम के साथ शांति की खोज कोई महत्त्व नहीं रखती, यदि उससे इस्राएल से समझौता करना पड़े।
- तेल-समृद्ध अरब राष्ट्रों को प्रसन्न करने की हमारी आवश्यकता कोई महत्त्व नहीं रखती, यदि उससे इस्राएल के शत्रुओं का पक्ष लेना पड़े।

- गिनती ३४ अध्याय क्रॉस-हैंडेड आशीष के ४५० वर्ष बाद घटित होता है।
- दो बटुकें और आधी दूसरी बटुक कनान में प्रवेश नहीं करतीं।
- रूबेन, गाद और मनश्शे की आधी बटुक।
- एफ्रेम और मनश्शे की बटुकें यूसुफ की बटुक का स्थान लेती हैं।
- लेवी की बटुक को कोई भू-भाग नहीं दिया गया।

लेवी की विरासत

- गिनती के समय लेवी इस्राएल की बटुक के रूप में अलग कर दिया गया।
- लेवियों का एकमात्र कार्य परमेश्वर की सेवा करना है।
- लेवियों को भू-भाग के बदले ४८ नगर दिए गए।
- यद्यपि १३ नामित बटुकें हैं, तथापि लेवी इस्राएल का अंग नहीं है।
- परमेश्वर ने लेवी को याकूब (इस्राएल) से अलग करके गोद लिया।
- इस्राएल के दो घराने मिलकर इस्राएल के सम्पूर्ण घराने को बनाते हैं।

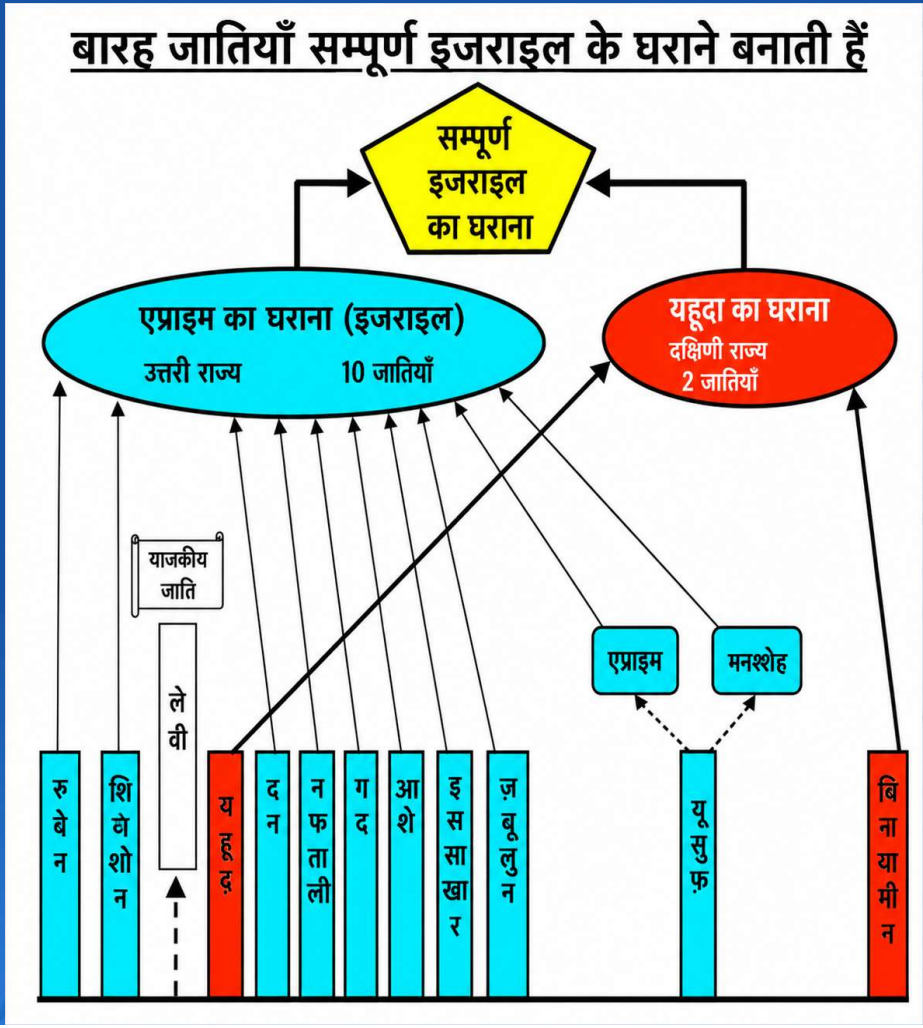

- आधुनिक इस्राएल मानता है कि उसकी समस्या मनुष्यों की षड्यंत्र है – संयुक्त राष्ट्र, यूरोपीय संघ, फिलिस्तीनी, मुस्लिम।
- इसलिए वे लड़ते हैं, बातचीत करते हैं, फिर लड़ते हैं, बातचीत करते हैं, फिर लड़ते हैं.....
- यशायाह ८:११-१६ – यशायाह ने कहा कि इस्राएल जैसा प्रतिक्रिया न करें, और इस्राएल जैसा भय न करें।
- बल्कि उन्हें परमेश्वर के साथ शांति की याचना करनी चाहिए!
- ईसाइयों को चाहिए कि वे पवित्र शास्त्रों पर विश्वास करें और शांति के लिए परमेश्वर की खोज करें, न कि बुराई के साथ समझौता करें।

इस्राएल के दो घराने

- यिर्मयाह ३३:२३-२६
- दो परिवार = दो घराने
- परमेश्वर कहता है: "...जगत कहता है कि उसने इस्राएल को त्याग दिया है....."
- उत्तर में परमेश्वर कहता है: "यदि दिन और रात का क्रम न रहे.....तो मैं भी इस्राएल को त्याग दूँगा....."
- इस्राएल परमेश्वर का चुना हुआ लोग है, और सदैव रहेगा।

इस्राएल दो राज्यों में विभक्त हो जाता है

- सुलैमान की मृत्यु ९२५ ई.पू. में होती है। उसके बाद... गृहयुद्ध!!!
- यहूदा दक्षिण पर नियन्त्रण रखता है। यहूदा ने बिन्यामिन को आत्मसात् कर लिया।
- एफ्रेम उत्तर पर नियन्त्रण रखता है।
- एफ्रेम ने अन्य दस बटुकों को आत्मसात् कर लिया।
- इस्राएल अब एफ्रेम कहलाने लगा।
- ९२५ ई.पू. के बाद बाइबिल “एफ्रेम” और “इस्राएल” शब्दों का एक-दूसरे के स्थान पर प्रयोग करेगी।

यहूदा और एफ्रेम अब दो भिन्न-भिन्न राज्य हो गए हैं

- एफ्रेम-इस्राएल ने अपने पड़ोसी राष्ट्रों के मूर्तिपूजक रीति-रिवाजों को अपना लिया।
- यहूदा अलग रहने का प्रयास करता रहा।
- एफ्रेम ने अपने पड़ोसियों के देवताओं को अपना लिया।